ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-11* February-2021
Anthology : The Research

मानवीय नैतिक मूल्य और पर्यावरण

Human Moral Values and Environment

Paper Submission: 15/02/2021, Date of Acceptance: 26/02/2021, Date of Publication: 27/02/2021

बृज मोहन मीना
सहायक आचार्य,
प्राणी शास्त्र विभाग,
राजकीय महाविद्यालय,
बांदीकुई, दौसा, राज, भारत

सारांश

हम भारत के लोगों की कोई ना कोई संस्कृति होती है और हम उसके अनुरूप ही जीवन जीते हैं और हमारी संस्कृति के स्थायित्व का आधार नैतिक शिक्षा ही है आज से हजारों वर्ष पूर्व जब मानव का उद्विकास हुआ था तब इसकी जाएं सीमित ही विकास ये क्रियाएं बहुत ही धीमी गति से चल रही थी वह जनसंख्या बहुत ही कम थी ऐसी परिस्थिति में प्रकृति व मानव के मध्य पूर्णतया सामंजस्य बैठा हुआ था परंतु जैसे मानव की आकांक्षाएं बढ़ती गई इसनेअपनी इच्छाओं की आपूर्ति के लिए प्रकृति से खिलवाड़ प्रारंभ कर दिया इस संदर्भ में मानव व्यस्त हो गया आधुनिक बनने की दौड़ मेंऔद्योगिकरण परिवहन के साधनों का आविष्कार एवं प्रयोग तथा असीमित मात्रा में जीवाश्म ईंधन का दोहन, जनसंख्या विस्फोट, जल व प्राकृतिक संसाधनों का व्यवहारिक इस्तेमाल जल, वायु, व मृदा, प्रदूषण, नगरीकरण इत्यादि अनेक प्रकार की समस्याओं से वह इतना ग्रसित हो गया कि अब उसे स्वयं का अस्तित्व खतरे में दिखाई देने लगा हम पर्यावरण के बहुत सारे पहलुओं को हल कर सकते हैं ,तो वह एकमात्र साधन है नैतिकता या हमारे मूल्यों को अपनाकर ।कभी भी हमारे मूल्य हमको किसी चीज का दोहन या अनैतिक तरीके से उपयोग करना नहीं सिखाते हैं हम हमारे जीवन मूल्य और संस्कृति को अपनाकर हम बहुत ही अच्छा करके पर्यावरणीय कारकों का संरक्षित कर सकते हैं हम हमारे मूल्यों से जैव विविधता और पर्यावरण को बचा सकते हैं आने वाली पीढ़ियों को हम इनको सुरक्षित रूप से दे सकते हैं जिसको वह विरासत समझ कर अपने पास सहेज कर रख सके।

We the people of India have some culture and we live life accordingly and moral stability is the basis of the stability of our culture, thousands of years ago, when human development took place, then its development is limited. These actions are very The population was very slow, the population was very small, in such a situation, there was complete harmony between nature and human, but as human aspirations grew, it started messing with nature in order to supply its desires. In the race to become modern, industrialization is the invention and use of the means of transport and exploitation of fossil fuels in unlimited quantities, population explosion, practical use of water and natural resources, water, air, and soil, pollution, urbanization, etc. He was so obsessed that now he started seeing his own existence in danger, we can solve many aspects of the environment, so the only means is by adopting morality or our values. Sometimes our values make us exploit something or immoral. Way use We do not teach to do, we can do our best by adopting our life values and culture, we can protect the environmental factors, we can save the biodiversity and environment from our values, we can give them safely to the future generations, which they can Considering inheritance, you can save it with yourself.

मुख्य शब्द : जीवाश्म, नैतिकता, औद्योगीकरण, जनसंख्या , पर्यावरण,जैवविविधता, आध्यात्म, संस्कृति, पारिस्थितिकी आदि।

Fossils, ethics, industrialization, population, environment, biodiversity, Spirituality, Culture, Ecology etc.

प्रस्तावना

पर्यावरण को होने वाली विनाशकारी लीलाओं के दुष्प्रभावों का संपूर्ण ज्ञान प्राचीन समय से ही है हमारे ऋषि मनीषियों को था। इसलिए हमेशा ही इनके द्वारा प्रकृति से प्रेम करने की अवधारणा को पुरजोर रूप से अपने प्रवचनों एवं सद्वचनो के द्वारा प्रोत्साहित किया जाता रहा है। यदि नहीं अनेक बड़े विचारों को, शिक्षाविदों व राजनीतिक सलाहकारों एवं नेताओं ने भी बड़े

प्रभावशाली ढंग से ऐसे ही विचार जनता के सामने रखें और प्रकृति व पृथ्वी को मानव गतिविधियों से बचाने का आह्वान किया है वर्तमान परिपेक्ष में अब स्कूलों व कॉलेजों के विद्यार्थियों को आवश्यक रूप से पर्यावरण के रखरखाव एवं इसकी सुरक्षा की संपूर्ण जानकारी उपलब्ध कराई जा रही है ताकि आज की पीढ़ी भविष्य खतरे से तो भली–भांति परिचित हो ही जावे साथ ही साथ इन पर पार पाने के लिए समस्त उपचार भी इन्हें ज्ञात हो इसी को नैतिक मूल्य कहते हैं।

मानवीय मूल्यों में मानवता के मूल गुण होते हैं जिनके बगैर मानवता की इमारत भरभरा कर गिर पड़ती है। मानव प्रकृति की खेती की फसल ही मानव मूल्य है। इस फसल में अनेक प्रकार के दाने हैं जिनसे सबसे मूल्यवान त्याग का दाना है ।उदाहरण के रूप में हम देखें तो वाल्मीकि करुणा के भाव से प्रेरित होकर अपनी पूजा आरती छोड़कर उन्हें पूजा और पक्षी की पीड़ा के बीच चुनाव करना था उन्होंने पर्यावरण की सुरक्षा के लिए ताकतवर वहेलिए का साथ छोड़ कर दुखी चिड़िया के साथ खड़े हुए ।कितना अंगूठा संबंध है मानव मूल्यों और पर्यावरण का यही नहीं मनुष्य के साथ–साथ मानवेत्तर प्रकृति से भी निर्मित हुए हैं ।इनमें पशु पक्षी बादल नदी पेड़ पौधे अर्थात समूचा परितंत्र समाहित है ।मानव अस्तित्व सहित वन संपदा और पशु पक्षियों का जीवन जोखिम में है। समुद्र में जीव लगातार विलुप्त हो रहे हैं। जिससे जल का पारिस्थितिकी तंत्र बिगड़ रहा है। पौधे जानवर की मछलियों और अन्य प्राणियों की स्वच्छता परागों के विकसन आदि में कमी आई है ।जीवाश्म ईंधन के प्रयोग और खेती के लिए वनों को काटे जाने से पृथ्वी का तापमान बढ़ रहा है । इसलिए दशकों से हम देखें तो पता चलता है कि तापमान वर्षों से बढ़ता चला जा रहा है ।सभी पर्यावरण विदों ने इस बढ़ते हुए तापमान को महसूस भी किया है और इसका कारण मानवीय दखल अंदाजी है। यह विनाशकारी जलवायु परिवर्तन में दुनिया को प्रलय की ओर धकेल दिया है।और यही कारण है कि प्रकृति को दुरुस्त रखने की लड़ाई में मानवता हारने लगी है।

अध्ययन के उद्देश्य

इस प्रकार के लेखनो से हम आम आदमी तक पर्यावरण सुरक्षा को लेकर अपना चिंतन बता सकते हैं ।और किसी प्रकार से हम नैतिक मूल्यों के द्वारा हम पर्यावरण का संरक्षण कर सकते हैं। और मानव मूल्य पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ते रहें।

बीसवीं सदी के मध्य तक विज्ञान की भूमिका का ध्येय सर्वथा नैतिक था। तथा सत्यता की खोज करना ही इसका प्रमुख उद्देश्य था। परंतु द्वितीय विश्वयुद्ध तथा विनाशकारी हथियारों के निर्माण व अन्य वैज्ञानिक खोज ने इसकी नैतिकता पर प्रश्न चिन्ह लगा दिए। नाभिकीय हथियारों, हानिकारक कीटनाशकों व कैडमियम, पारा ,शीशा जैसे घातक रसायनों के प्रयोग व हरित गृह प्रभाव, वैश्विक तापन, अम्ल वर्षा तथा ओजोन छिद्र के वृहतकरण जैसी अनेकानेक समस्याओं से मानव ग्रसित होने लगा और इसका स्वयं का जीवन कष्टदायी होने लग गया इसलिए समझा जाने लगा कि मानव का बचाव केवल मात्र एक ही बात से संभव है। और वह है हमारे प्राकृतिक वातावरण का संरक्षण इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए 9 जुलाई 1955 को एक साझा वक्तव्य तैयार किया गया जिस पर अल्बर्ट आइंस्टाइन एवं बैटरेण्ड रसल ने संयुक्त हस्ताक्षर किए उसका सार निम्न प्रकार है।ष्ऐसी भयावह स्थिति में जबकि महा विनाशकारी हथियारों के प्रयोग में मानवता का अस्तित्व खतरे में डाल दिया है ।हम महसूस करते हैं कि ऐसे खतरों से निजात दिलाने के लिए समस्त वैज्ञानिकों को सम्मेलन में एकत्रित होना चाहिए। यहां पर हम किसी राष्ट्र के सदस्य के रूप में नहीं परंतु उस मानव जाति के सदस्य के रूप में बोल रहे हैं जिसका अस्तित्व खतरे में है।ष्यह कथन हमें नैतिकता का पाठ पढ़ाता है ।क्योंकि इनका वक्तव्य नई विचारधारा विकसित करने हेतु प्रेरित करता है ।जिससे कि पृथ्वी पर सभ्यताओं एवं जीवन का स्वरूप निरंतर बना रहे हमारे नैतिक विचारों एवं क्रियाकलापों में आमूलचूल परिवर्तन की आवश्यकता है। सभी प्रकार की सामाजिक गतिविधियां वैज्ञानिक अनुसंधान व प्रकृति से संबंधित अवधारणाएं ऐसी परिपेक्ष में समझी वह क्रियान्वित की जानी चाहिए इन सब का हमारे पास एक ठोस विकल्प है जो हमें सदियों से न केवल सच्ची राह दिखाता चला आ रहा है। नैतिकता का ज्ञान बोध भी कराता आ रहा है धार्मिक प्रवृत्ति के रूप में इसे जाना जाता है।हम भारतीयों के पास आध्यात्म एक ऐसा अनोखा रास्ता है ,जो हमें हर क्षेत्र में कार्य करने हेतु सद्विचार देता है तथा हमारे नैतिक मूल्यों को सुरक्षा भी करता है। यह हमें प्रकृति के नियमों के अनुसार चलने का उपदेश देता है न कि इसके साथ खिलवाड़ कर जीवन के स्तर को बढ़ाने का। इसके अनुरूप हमें किसी भी हालात में एक आक्रामक की भांति अपनी प्रकृति पर हुकूमत नहीं जतानी चाहिए वरना इस पृथ्वी पर सबसे समझदार प्राणी होने के नाते इसके नियमों की सही प्रकार से व्याख्या स्वयं पर लागू करने का भरसक प्रयत्न करना चाहिए इसी से हमारा कल्याण संभव है।

संपूर्ण विश्व की धार्मिक विचार धाराएं हमारे सांस्कृतिक एवं सामाजिक जीवन मूल्यों की कारण धार है भिन्न–भिन्न धर्मों को मानने वालों के रीति रिवाज अलग–अलग हो सकते हैं परंतु संपूर्ण विश्व के बारे में सभी का आकलन समान ही है मानव जल वायु मृदा व पादप एवं प्राणी संपदा एक दूसरे पर प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से आश्रित है इन्हें एक–दूसरे से अथवा ब्रह्मांड से विलग नहीं किया जा सकता है। यही अवधारणा हमारी पृथ्वी की सुरक्षा का मंत्र भी है ।आज से 3000 वर्षों से भी पहले लिखे गए हमारे धार्मिक ग्रंथों जैसे वेदों एवं उपनिषदों में यह तथ्य प्रधानता से अंकित किए गए हैं। एवं हमारी मौलिकता व नैतिक शिक्षा के आधार हैं निम्नलिखित बिंदु प्रकृति प्रेम व इसकी सुरक्षा हेतु नैतिकता का ज्ञान कराते हैंरू–

सभी जैविक व अजैविक तत्वों का निर्माण व इनका कंधार परमात्मा है।

'हम सभी(जैविक व अजैविक तत्व) एक दूसरे के पूरक हैं।

'हम सभी आपस में जुड़े हुए हैं वह एक दूसरे पर आश्रित हैं।

'चाहे जैविक तत्व हो या ए अजैविक मानव हो या पादप सभी की एक समान अहमियतता हैं।

'यदि किसी भी तत्व की हानि की गई तो इससे जुड़ी अन्य सभी कडिया भी स्वता ही प्रतिकूल रूप से प्रभावित होंगी अतः स्वयं की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए प्रकृति से प्रेम व इसके नियमों की अनुपालना करना परम आवश्यक है।

हमारी वातावरणीय नैतिकता इसी में नियत है कि हम प्रकृति से अपने अनावश्यक खिलवाड़ को सीमित रखें प्रकृति के साथ शांतिप्रिय ढंग से जीवन यापन करें हिंसक प्रवृत्ति के धनी बने महात्मा गांधी ने कहा था कि ष्प्रकृति मानव की इच्छाओं एवं आवश्यकताओं की भरपाई के लिए भरपूर देती है परंतु यह मानव जाति का लोग ही है जो प्रकृति को नष्ट कर रहा है।ष[5]

एक प्रकार के पारिस्थितिकी संस्कृति विकसित करने की आवश्यकता है। जो इस तथ्य की गवाह होगी कि यदि प्रकृति के साथ सामंजस्य बिठाकर इसके संसाधनों का नैतिक प्रयोग किया जाए तो यह अपने भंडारों का पुनर्भरण कर लेगी परंतु यदि इसका अविवेकपूर्ण तरीके से इस्तेमाल किया गया तो यह नष्ट हो जाएगी यही बात आज तक मानव को नैतिकता के प्रथम पाठ के रूप में समझनी होगी। तभी हमारी प्रकृति एवं अन्ततरूहमारी स्वयं की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सकती है ।अतः मानव जो अपनी बुद्धिमत्ता का दंभ भरता है यदि अपने विवेक एवं समझदारी का प्रयोग करते हुए प्रकृति के साथ रहना सीख लेता है तो इसका अस्तित्व दीर्घ बना रह सकता है ।इसमें कोई शक की रपबात नहीं है फ्रांसिस बेकन ने ठीक ही कहा है कि ष्मानव कभी प्रकृ ति का नेतृत्व नहीं कर सकता उसे इसके अनुरूप चलना ही होगा अर्थात मानव ने यदि कभी भी पृथ्वी के पर्यावरण पर नियंत्रण करने की असफल चेष्टा की तो यह इसके सर्व विनाश का कारण बनेगी अनेक वृक्षों की प्रजातियाँ (नीम,पीपल,बरगद) प्राणियों देवी देवताओं की सवारियों के रूप में (शेर चूहा हंस इत्यादि) भूमि, जल वायु अर्थात पृथ्वी, नदियों को पूजनीय बनाकर हमारे ऋषि–मुनियों एवं विचारको ने इनके संरक्षण एवं लंबे अस्तित्व का ज्ञान हमें दिया है।

पर्यावरण के अहम पहलुओं को नुकसान पहुंचाने में मध्यम वर्ग की भी अहम भूमिका है । ज्यादा यात्राएं करते हैं मानव की संख्या चिंता का विषय नहीं है चिंता है उनके प्रभाव से अगर हम परिवार का आकार को छोटा करते हैं। तो खपत की मात्रा घटेगी लड़कियों और महिलाओं को सशक्त करके उन्हें एवं शिक्षा और परिवार नियोजन हेतु शिक्षा प्रदान करके इस दिशा में आगे बढ़ाया जा सकता है इस चिंता को देखते हुए वैज्ञानिकों ने चेतावनी जारी की है इस रिपोर्ट से लोगों में जागृति आएगी सही सूचनाओं को जान सकेंगे दूसरे लोगों को भी पर्यावरण पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव पर पुनर्विचार के लिए प्रेरित करेंगे यहां वैश्विक उपकरण और जलवायु में एक व्यापक सार्वजनिक बहस की जमीन तैयार करना जरूरी है इस पर भी विचार कीऔर असीम ऊर्जा स्रोतों का उपयोग करना चाहिए।

निष्कर्ष

उपरोक्त सभी बातों से हमें यह ज्ञात होता है कि पर्यावरण की रक्षा करनी है तो हमें इसके लिए अधिकाधिक उद्यानों एवं प्राकृतिक दृष्टि से बचाव वाले स्थानों का निर्माण करना आवश्यक है। जंगली जानवरों के व्यापार पर पूरी तरह से रोक लगानी होगी पौधों पर आधारित वह फल फूलों पर आधारित आहार लेना होगा प्राकृतिक आवास की सुरक्षा करने परिस्थितियों को बहाल करने प्रदूषण को रोकने आक्रामक एवं अन्य संक्रमणीय जातियों को रोकने में यदि मानवता अपेक्षित जरूरी कदम नहीं उठाएंगे तो पृथ्वी के साथ उसका विनाश भी सुनिश्चित है हम इन सभी विनाशकारी विध्वंसो से बचने के लिए हमें नैतिकता की शिक्षा प्राइमरी स्तर से ही शुरू करनी होगी जिससे कि हमारी सोच शुरू से ही पर्यावरण संरक्षण के लिए सकारात्मक हो सके और हमारी जैव विविधता का संरक्षण हो सके और नैतिकता के द्वारा ही हमारी दशा और दिशा बदल सकती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *भाटिया, कोहली, भटनागर, पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण जैविकी।*
2. *के.सी. सोनी पारस्थितिकी एवं पर्यावरण जैविकी।*
3. *अनुजा त्यागी, मंजू लता के. सक्सेना,नरेंद्र जैन पर्यावरण अध्ययन।*
4. *पी.डी. शर्मा पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण जैविकी।*
5. *धीरेंद्र देवर्षि पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण जैविकी।*
6. *मायाराम नवानी सुलभ प्रकाशन लखनऊ*
7. *विभिन्न समाचार पत्र पत्रिकाएं।*